RNI NO HARHIN/2017/72144

मूल्य 90 रूपए

यात्रा आमंत्रण

अंक 16

भारत की एकमात्र हिंदी पर्यटन पत्रिका

मार्च - अप्रैल 2025

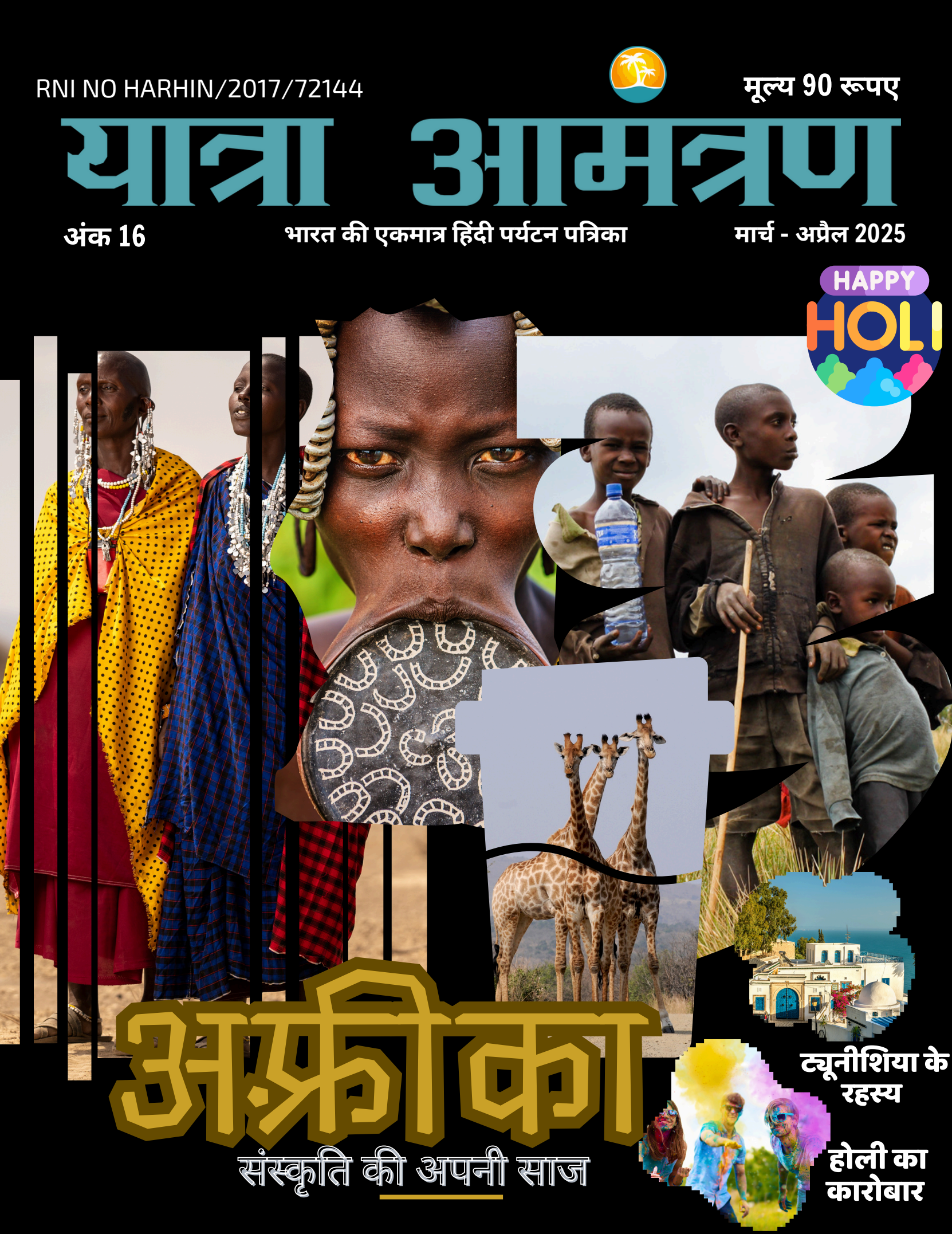

अफ्रीका

संस्कृति की अपनी साज

ट्यूनीशिया के रहस्य

होली का कारोबार

सेमिनार

समझौता ज्ञापन

भारत-ओकिनावा पर्यटन सहयोग के लिए समझौता ज्ञापन

भारत और ओकिनावा, जापान के बीच पर्यटन सहयोग को बढ़ावा देने के लिए भारत के आउटबाउंड टूर ऑपरेटर्स एसोसिएशन *(OTOAI)* और ओकिनावा-भारत फ्रेंडशिप एसोसिएशन *(OIFA)* ने एक समझौता ज्ञापन *(MOU)* पर हस्ताक्षर किए हैं। यह हस्ताक्षर समारोह दिल्ली के ले मेरिडियन होटल में हुआ, जो यात्रा आदान-प्रदान को बढ़ावा देने और द्विपक्षीय पर्यटन संबंधों को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

समझौता ज्ञापन पर ओटीओएआई के उपाध्यक्ष श्री श्रवण भल्ला और ओआईएफए के अध्यक्ष श्री मोरिताके टोमिकावा ने हस्ताक्षर किए। इस कार्यक्रम में ओकिनावा से एक प्रमुख प्रतिनिधिमंडल भी उपस्थित था, जिसमें ओन्ना नगरपालिका (ओकिनावा ओन्ना गांव) के महापौर श्री योशिमी नागाहामा, ओन्ना गांव पर्यटन संघ की श्रीमती रुमिको मियाज़ाकी, और किंकी निप्पोन टूरिस्ट ओकिनावा की श्रीमती मयूमी यमाशिरो शामिल थीं।

कोरिया रोडशो

कोरिया टूरिज़्म ऑर्गनाइजेशन *(KTO)* ने भारत के आउटबाउंड टूर ऑपरेटर्स एसोसिएशन *(OTOAI)* के साथ मिलकर *14* फरवरी, *2025* को मुंबई में कोरिया टूरिज़्म रोडशो का सफल आयोजन किया। इस रोडशो ने भारतीय यात्रा उद्योग के प्रति कोरिया की प्रतिबद्धता को और मजबूत किया और दक्षिण कोरिया में भारतीय पर्यटकों की संख्या बढ़ाने के लिए प्रमुख कार्यक्रमों का प्रस्तुतिकरण किया।

इस अवसर पर यात्रा आमंत्रण के मुख्य संपादक बिष्वदीप रायचौधुरी ने श्री म्योंग किल युन, क्षेत्रीय निदेशक – भारत और *SAARC* देशों से मुलाकात की और दक्षिण कोरिया के पर्यटन दृष्टिकोण के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त की। इस कार्यक्रम के तहत, भाग लेने वाली एजेंसियां कोरिया के विभिन्न शहरों जैसे बुसान, गांगवोन-डो, ज्योल्लानाम-डो, या ज्योल्लाबुक-डो को शामिल करते हुए कोरिया-विशिष्ट यात्रा पैकेज विकसित करेंगी। यात्रा एजेंटों को अपनी यात्रा योजना, विपणन योजना और वीजा सुविधा रणनीति के बारे में विस्तृत प्रस्ताव जमा करना होगा।

PHDCI फिल्म टूरिज़्म कॉन्क्लेव के अवसर पर, यात्रा आमंत्रण को इस सम्मेलन में शामिल होने का निमंत्रण मिला। इस दौरान,यात्रा आमंत्रण के मुख्य संपादक बिष्वदीप रायचौधुरी को मध्य प्रदेश पर्यटन के उप निदेशक श्री राम कुमार तिवारी से मिलने का अवसर प्राप्त हुआ। यह एक सुखद अनुभव था, जिसमें उन्हें मध्य प्रदेश द्वारा फिल्म पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए आगामी पहल और योजनाओं को समझने का मौका मिला।

छत्तीसगढ़ का पर्यटन क्षेत्र अन्वेषित करने की जरूरत

मुंबई इन्वेस्टर कनेक्ट मीट में छत्तीसगढ़ ने *6,000* करोड़ रुपये के निवेश प्रस्ताव आकर्षित किए हैं, जिसमें प्रमुख चर्चाओं का नेतृत्व मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने किया। निवेश प्रस्ताव मुख्य रूप से आईटी, स्वास्थ्य, पर्यटन और खाद्य प्रसंस्करण जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में हैं, जो राज्य की बढ़ती औद्योगिक क्षमता को प्रदर्शित करते हैं। यात्रा आमंत्रण के मुख्य संपादक बिष्वदीप रायचौधुरी भी इस अवसर पर उपस्थित थे। उनका मानना है कि छत्तीसगढ़ में पर्यटन क्षेत्र अभी पूरी तरह से अन्वेषित नहीं हुआ है और इसे गंभीरता से लिया जाना चाहिए। उनके अनुसार, राज्य में पर्यटन की अपार संभावनाएं हैं जिन्हें विकसित किया जाना आवश्यक है।

आउटबाउंड टूर ऑपरेटर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया *(OTOAI)* ने गर्व के साथ *SATTE 2025* में भाग लिया, जो *19* से *21* फरवरी, *2025* तक द्वारका के यशोभूमि कन्वेंशन सेंटर में आयोजित हुआ। इस कार्यक्रम में *OTOAI* के स्टॉल पर जबरदस्त प्रतिक्रिया देखने को मिली, जिसने भारत के आउटबाउंड पर्यटन क्षेत्र में इसके नेतृत्व की भूमिका को और मजबूत किया।

SATTE 2025 में *OTOAI* की उपस्थिति का एक प्रमुख आकर्षण था *OA* ग्लोब नेटवर्किंग आवर, जो वन अबव ग्लोब स्टॉल पर आयोजित किया गया। यह विशेष सत्र *OTOAI* के सदस्यों को प्रमुख *DMC* साझेदारों, होटल समूहों और वैश्विक आकर्षणों से जुड़ने का एक मूल्यवान मंच प्रदान करता है। इस पहल का उद्देश्य व्यापारिक संबंधों को मजबूत करना और यात्रा साझेदारी के लिए नए रास्ते खोलना था।

संपादक के कलम से

अफ्रीका एक विशाल और विविध महाद्वीप है, लेकिन इसके अंदरूनी हालातों में कई जटिलताएं हैं जो इसके सामाजिक और राजनीतिक अस्थिरता का कारण बनती हैं। यह अस्थिरता अफ्रीका के पर्यटन उद्योग के लिए एक बड़ी बाधा बन सकती है। हैती की असुरक्षा, डीआर कांगो का बुनियादी ढांचा न होना, और नाइजीरिया में समुद्री डाकूओं की गतिविधियाँ जैसे मुद्दे अफ्रीका की यात्रा पर सवाल उठाते हैं। वहीं, दक्षिण अफ्रीका में बेरोज़गारी का संकट और युगांडा का वन्य जीवन को पर्यटन के रूप में पेश करने की कोशिश जैसे सकारात्मक पहलू भी हैं। इन सभी समस्याओं और संभावनाओं के बीच अफ्रीका की कहानी एक चुनौतीपूर्ण लेकिन रोचक यात्रा है।

इसके अलावा, अफ्रीका की लगभग 20% आबादी गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करती है, और करीब 50% लोग बेरोजगारी का सामना कर रहे हैं। अफ्रीकी महाद्वीप के कई देश, जैसे नाइजीरिया और सोमालिया, युद्ध और संघर्षों से जूझ रहे हैं, जिसके कारण पर्यटन स्थलों तक पहुंच पाना मुश्किल हो जाता है। अफ्रीका के कुछ देशों में राजनीतिक अस्थिरता के कारण विदेशी निवेश और व्यापार में भी कमी आई है, जो पर्यटन उद्योग के विकास में एक बड़ी रुकावट है।

हालांकि, अफ्रीका में इतिहास, संस्कृति और प्राकृतिक धरोहर की कोई कमी नहीं है। कांगो, तंजानिया, और केन्या जैसे देशों में वन्यजीवों की अद्भुत विविधता है, जबकि मिस्त्र और मोरक्को में ऐतिहासिक धरोहरों का खजाना मौजूद है। अफ्रीका के पर्यटन उद्योग में एक बड़ी संभावना है, लेकिन इसके लिए स्थिरता, सुरक्षा और बेहतर बुनियादी ढांचे की जरूरत है। क्या अफ्रीका पर्यटन के लिए एक आदर्श गंतव्य बन सकता है? यह सवाल आज भी कई दृष्टिकोणों से जटिल है, लेकिन इस पर विचार करने के लिए यह सही समय है।

इस विशेष अंक में हम अफ्रीका के पर्यटन के विभिन्न पहलुओं को समझने की कोशिश करेंगे, यह देखेंगे कि क्या अफ्रीका में पर्यटन का विकास हो सकता है और क्या हम इस महाद्वीप में यात्रा करने के लिए तैयार हैं। अफ्रीका में पर्यटन का विकास वहां की सामाजिक-आर्थिक स्थितियों में सुधार लाने, स्थानीय समुदायों के लिए रोजगार के अवसर सृजित करने, और वैश्विक स्तर पर शांति व सुरक्षा की स्थिति बेहतर बनाने में मददगार हो सकता है।

संपादकीय टीम

संपादक

बिस्वदीप रॉयचौधरी

सलाहकार

गौर कंजीलाल

वरिष्ठ संवाददाता

सुहासिनी साकिर

उत्तर प्रदेश ब्यूरो प्रमुख

प्रताप सिंह

सांगली संवाददाता

तेजस संगार

दिल्ली टीम

कपिल अत्री

दीपक शर्मा

शंकर सिंह कोरंगा

मोहन जोशी

भावना अत्री

यूरोप संवाददाता

चेतन वाधेर

सोशल मीडिया पोस्ट प्रोडक्शन

विकांत रंजन

मुंबई टीम

नरेंद्र पाटिल

पता:

189/10, सेक्टर एक, चर्कोप,
कांदिवली (पश्चिम), मुंबई 61

हमाराअनुसरण करें:

@yatramantran

हमारी वेबसाइट पर जाएं:

www.willindiachange.org
www.yatramantran.com

हमारे यूट्यूब चैनल को सब्सक्राइब करें:

यात्रा आमंत्रण

विशेष धन्यवाद:

भूटान पर्यटन / वाइल्डलाइफ एसओएस / बिहार पर्यटन

भूटानः प्रकृति का आशीर्वाद प्राप्त देश

प्रकृति, शांति और खुशहाली का संगम

लेख सौजन्य - भूटान पर्यटन

भूटान, अपनी अपूर्व प्राकृतिक सुंदरता, अद्वितीय जैव विविधता और गहरे सांस्कृतिक धरोहर के लिए प्रसिद्ध है। यह देश पर्यावरण प्रेमियों और साहसिक यात्रियों के लिए एक आदर्श स्थान है, जो अपनी मंत्रमुग्ध कर देने वाली सुंदरता और विविध पारिस्थितिकीय तंत्र के लिए प्रसिद्ध है। भूटान का पर्यटन, जो पर्यावरण संरक्षण और सांस्कृतिक धरोहर को प्राथमिकता देता है, 2025 और इसके बाद स्थायी पर्यटन के प्रमुख गंतव्यों में शामिल होने का लक्ष्य रखता है। यहां का पर्यटन मॉडल "ग्रॉस नेशनल हैपिनेस" (GNH) की धारा पर आधारित है, और भूटान ने अपनी कार्बन-नकारात्मक स्थिति को बनाए रखते हुए इसे सही दिशा में आगे बढ़ाया है।

भूटान में 70% से अधिक वनावरण है और इसके 51% भूमि क्षेत्र को संरक्षित क्षेत्रों के रूप में नामित किया गया है, जो इसे दुनिया के प्रमुख जैव विविधता हॉटस्पॉट्स में से एक बनाता है। यहां की अद्वितीय परिदृश्य में 34 महत्वपूर्ण पर्वत शामिल हैं, जिनमें गांगखर पुन्सुम (7,570 मीटर), जो दुनिया का सबसे ऊंचा अवसादित शिखर है, जोमोल्हारी (7,326 मीटर), जो एक पवित्र स्थल है, और जित्वू ड्रैक (6,714 मीटर) शामिल हैं, जो अपनी नाटकीय चोटियों के लिए प्रसिद्ध है। भूटान में लगभग 700 पक्षियों की प्रजातियां पाई जाती हैं, जिनमें से कई पक्षी प्रजातियां उष्णकटिबंधीय जंगलों से लेकर आल्पाइन क्षेत्रों तक के पारिस्थितिकीय तंत्र में पाई जाती हैं। भूटान के राष्ट्रीय उद्यानों में जिग्मे डोरजी वांगचुक और बुमडेलिंग वाइल्डलाइफ सैंक्चुरी जैसे उद्यान शामिल हैं, जो इन विविध पारिस्थितिकीय तंत्रों की रक्षा करते हैं।

भूटान में कई ऐसे आयोजन होते हैं जो इसके पर्वतों और जैव विविधता को मनाने के लिए आयोजित किए जाते हैं। इन आयोजनों में प्रमुख है जोमोल्हारी पर्वत महोत्सव, जो प्रत्येक वर्ष 14 से 15 अक्टूबर तक लिंगजी दुङखाग, थिम्पू में आयोजित होता है। यह महोत्सव पर्यटकों को भूटान की समृद्ध संस्कृति और प्राकृतिक सुंदरता में डूबने का एक अद्वितीय अवसर प्रदान करता है, जहां समुदाय की संस्कृति और संकटग्रस्त स्नो लेपर्ड की रक्षा के प्रयासों पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। इसी तरह, ब्लैक माउंटेन महोत्सव थिम्पू से लगभग 6 घंटे की ड्राइव पर, ट्रोंगसा में मनाया जाता है। यह महोत्सव ब्लैक माउंटेन क्षेत्र की अद्वितीय संस्कृति और जैव विविधता को प्रदर्शित करता है, साथ ही स्थानीय समुदायों को समर्थन प्रदान करता है।

भूटान अपनी जैव विविधता के कारण पक्षी प्रेमियों के लिए एक आदर्श स्थल है। वांगड्यू फोड्रांग में फोब्जिका घाटी, जो थिम्पू से लगभग चार घंटे की ड्राइव पर स्थित है, प्रवासी काले-गर्दन वाले सारस को देखने के लिए प्रसिद्ध है, जो हर सर्दियों में उत्तर से आते हैं। जिग्मे डोरजी नेशनल पार्क, जो भूटान के सबसे बड़े संरक्षित क्षेत्रों में से एक है, यहां दुर्लभ पक्षी प्रजातियां देखने का बेहतरीन अवसर प्रदान करता है, जैसे सैटिर ट्रैगोपन, हिमालयन मोनल और दुर्लभ व्हाइट-बैलीड हेरॉन। भूटान के राष्ट्रीय उद्यानों में अन्य कई जंगली जानवर भी पाए जाते हैं, जैसे स्नो लेपर्ड, बाघ और रेड पांडा।

"भूटान यात्रियों को एक अद्वितीय साहसिक यात्रा पर आमंत्रित करता है, जहां हमारे अपूर्व परिदृश्य, जीवंत संस्कृति और समृद्ध जैव विविधता का संगम होता है। यहां हर यात्रा प्रकृति की सुंदरता को समझने और उसे संरक्षित करने की दिशा में एक कदम होती है। हम साहसिक प्रेमियों और प्रकृति के प्रेमियों को भूटान की खूबसूरत चोटियों, हरे-भरे जंगलों और प्रचुर वन्य जीवन का अन्वेषण करने के लिए आमंत्रित करते हैं, जो हमारे संरक्षण और सतत जीवन की प्रतिबद्धता का अभिन्न हिस्सा हैं," ये शब्द भूटान के पर्यटन विभाग के निदेशक, दमचो रिंजिन के हैं।

इसलिए, यदि आप एक साहसिक यात्रा की तलाश में हैं या प्रकृति और जैव विविधता के बीच एक अद्वितीय अनुभव प्राप्त करना चाहते हैं, तो भूटान आपके लिए एक आदर्श गंतव्य हो सकता है। यहां की यात्रा न केवल एक छुट्टी है, बल्कि यह एक अनुभव है जो आपको हमारे प्राकृतिक संसार की सुंदरता और इसके संरक्षण के महत्व को समझने में मदद करेगा।

टर्टल आइलैंड्स: एक अद्वितीय द्वीपसमूह

अफ्रीका

टर्टलआइलैंड्स एक दूरस्थ द्वीप समूह है, जिसमें आठ द्वीप शामिल हैं, जोअटलांटिक महासागर में बाँथे/ शेरब्रो द्वीप के पश्चिम में स्थित हैं। इनआठ द्वीपों के नाम हैं: बकी, बम्पेतुक, चेपो, होंग, मूट, न्यांगेई, सई और येले। इनमें से चेपो, बकीऔर न्यांगेई द्वीप मछुआरों की बस्तियों द्वारा बसे हुए हैं, और होंग द्वीप पर केवल उनपुरुषों को जाने की अनुमति है, जिन्हें यहाँ जाने के लिए विशेष अनुमति प्राप्त है।ये निचले समुद्र तल पर स्थित बालू वाले द्वीप हैं, जिनके शांत और स्वच्छ नीले और टरकोइज़ रंग के पानी स्विमिंग और स्नॉर्कलिंग के लिए आदर्श हैं, साथ ही इन द्वीपों के किनारों पर पाम और मैंग्रोव के वृक्ष लगे हुए हैं, जो स्वतंत्र रूप से अन्वेषण और सैर के लिए उपयुक्त हैं।

क्या करें ?

टर्टल आइलैंड्स वह आदर्श स्थान हैं, जहाँ आप अपनी छुट्टियों से एक छुट्टी का अनुभव कर सकते हैं, यहाँ आप पूरी तरह से प्रकृति से घिरे हुए इस स्थान पर होने का एहसास करेंगे, जहाँ जीवन सदियों से लगभग अपरिवर्तित रहा है।ये द्वीप सिएरा लियोन में 'आइ लैंड लाइफ' काआनंद लेने के लिए एक बेहतरीन स्थान हैं, जहाँ आप अपने दिन शांत जल में तैरते हुए और धूप में आराम करते हुए बिता सकते हैं, बाहरी दुनिया को भूलकर।यहाँ सई द्वीप पर एक दिन की यात्रा की जा सकती है, जिसमें आमतौर पर लंच और तैरने व अन्वेषण का समय शामिल होता है, और स्पोर्ट फिशिंग के कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते हैं। एक और लोकप्रिय गतिविधि है गांव की सैर, जहाँ आप स्थानीय समुदाय के लोगों से मिल सकते हैं और उनके जीवन शैली के बारे में जान सकते हैं।

यहाँ कैसे पहुँचें?

टर्टलआइलैंड्स का आकर्षण उनके दूरस्थ स्थान में निहित है। इस द्वीप समूह तकपहुँचने का सबसे आसान तरीका फ्रीटाउन या बनाना द्वीप से स्पीडबोट द्वारा यात्रा करना है – यह यात्रा लगभग 3 घंटे की होती है, जो ज्वार और समुद्र की स्थिति पर निर्भर करती है। यहाँ से बाँथे/ शेरब्रो द्वीप से भी नावें जाती हैं, लेकिन यह बेहतर है कि आप पहले से एक स्थानीय ऑपरेटर के साथ अपनी यात्रा की व्यवस्था कर लें।

रवांडा की इनयाम्बो: वो गायें जिन्हें शाही दर्जा प्राप्त है

रवांडा के किंग्स पैलेस म्यूजियम में आने वाले आगंतुकों को देश की अनमोल गायों का पता उनके गाने की आवाज़ों के माध्यम से चलता है।इन गायों को रवांडा में "इनयाम्बो" और उगांडा में "बिहोगो" के नाम से जाना जाता है।ये विशालकाय गायें अपनी सफेद, सिमेट्रिकल सींगों के लिए प्रसिद्ध हैं, जो उनके सिर के ऊपर कई फीट तक फैल जाती हैं।

इन गायों को मांस या दूध के लिए नहीं, बल्कि केवल धार्मिक और सांस्कृतिक उद्देश्यों के लिए पाला जाता है।म्यूजियम में मौजूद इन गायों का झुंड कुल 15 गायों का है, जिन में से प्रत्येक गाय आभूषण और रिबन से सजी हुई होती है।ये गायें रवांडा की संस्कृति और इतिहास में अपनी लंबी और महत्वपूर्ण भूमिका को प्रदर्शित करती हैं।

इन गायों का पालन विशेष रूप से समारोहों और पारंपरिक आयोजनों में किया जाता है, और वेरवांडा की सांस्कृतिक धरोहर का एकमहत्वपूर्ण हिस्सा मानी जाती हैं। इनयाम्बो न केवल अपने भव्य रूप के लिए प्रसिद्ध हैं, बल्कि येरवांडा की परंपराओं और राजा के दरबार से भी जुड़ी हुई हैं।

इस प्रकार, इन गायों की उपस्थिति रवांडा की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर और इतिहास को जीवित रखने का प्रतीक है।

टुवालू का भविष्य: अनिश्चितता के बीच आशा
टुवालू को बड़े समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है: एकांत, जलवायु परिवर्तन, और वित्तीय समस्याएँ।

टुवालू - मात्र दस हज़ार लोगो का देश

कल्पना करें, एक ऐसा देश जो इतना एकांत में है कि वहाँ हफ्ते में सिर्फ दो फ्लाइट्स आती हैं। एक ऐसा राष्ट्र जो समुद्र स्तर के बढ़ने से संकट में है। स्वागत है टुवालू में। यह द्वीप अपनी आय के लिए **".TV"** डोमेनपर निर्भर है और जलवायु परिवर्तन से जूझ रहा है। यह लेख टुवालू के उन चुनौतियों और चौंकाने वाली वास्तविकताओं का अन्वेषण करता है। क्यों यह सबसे कम देखा जाने वाला स्थान है? इस राष्ट्र का भविष्य क्या होगा?

वीज़ा-मुक्त, फिर भी पर्यटकों से खाली: टुवालू का विरोधाभास

आपको टुवालू जाने के लिए वीज़ा की जरूरत नहीं है, फिर भी बहुत कम लोग वहाँ जाते हैं। क्यों? यहाँ पर्यटकों के लिए कोई बड़ी सुविधाएं नहीं हैं। कोई शानदार रिसॉर्ट्स या टूर गाइड्स नहीं हैं। टुवालू एक विरोधाभास है! यह खुला है, लेकिन खाली है।

एक सड़क, एक बैंक और एक खुली जेल

टुवालू में सीमित बुनियादी ढांचा है। यहाँ एक मुख्य सड़क और केवल एक बैंक है। यहाँ तक कि जेल भी "खुली" है। लोग काम करने के लिए बाहर जाते हैं और फिर वापस आते हैं। स्थानीय लोग मछली पकड़ने, जुआ खेलने और एक साथ समय बिताने का आनंद लेते हैं।

एक डूबते हुए द्वीप पर जीवन: जलवायु परिवर्तन का प्रभाव

जलवायु परिवर्तन ने टुवालू को बुरी तरह प्रभावित किया है। समुद्र स्तर बढ़ रहे हैं और भूमि का कटाव हो रहा है। लोग विस्थापित हो रहे हैं। यह द्वीपीय राष्ट्र पर इसका क्या असर पड़ा है?

"हम डूब रहे हैं": टुवालू से एक आपातकालीन अपील

यह द्वीप अक्सर जलमग्न हो जाता है। भूमि गायब हो रही है, और मीठे पानी में खारा पानी मिल रहा है। टुवालू के मंत्री ने दुनिया से कहा, "देखो, हमारा देश डूब रहा है।" यह एक desesperate अपीलथी।

अपने ही देश में जलवायु शरणार्थी

परिवार जलवायु परिवर्तन के कारण स्थानांतरित हो रहे हैं। सरकार समाधान ढूंढ रही है। ऑस्ट्रेलिया ने भूमि का प्रस्ताव किया, लेकिन कई टुवालूवासियों को छोड़ने का मन नहीं है। वे अपना घर छोड़ना नहीं चाहते, भले ही वह खतरे में हो।

".tv" डोमेन: टुवालू की अप्रत्याशित आय का स्रोत

टुवालू अपनी ".tv" डोमेनसे पैसे कमाता है। लोग इसका उपयोग करने के लिए भुगतान करते हैं। यह आय देश और इसके लोगों का समर्थन करती है। यह एक अप्रत्याशित आय का स्रोत है!

फुनाफ़ुटी का अन्वेषण: राजधानी का एक वॉकिंग टूर

आइए, फुनाफ़ुटी में एक सैर पर चलते हैं! यहाँ के स्थलचिह्न, दुकानें, और शहर का अद्वितीय माहौल देखें। यह एक छोटी सी राजधानी है, लेकिन दिल से बड़ी है।

इतिहास, संस्कृति और प्राकृतिक सौंदर्य का संगम

अफ्रीका

जांज़ीबार द्वीप

जांज़ीबार द्वीप, जिसे मसाले के द्वीप के नाम से भी जाना जाता है, एक अत्यंत खूबसूरत और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध स्थल है।सफेद रेत से सजी समुद्र तटों पर खड़ी ताड़ के पेड़, जो धीरे-धीरे समुद्र की हल्की ठंडी हवा में झूलते हैं, यह सभी मिलकर जांज़ीबार को एक अद्वितीय स्थल बनाते हैं। यहाँ का आकर्षक वातावरण और आरामदायक माहौल इसे न केवल घूमने के लिए बल्कि विश्राम और नवीनीकरण के लिए भी आदर्श बनाता है।

स्थान और संरचना

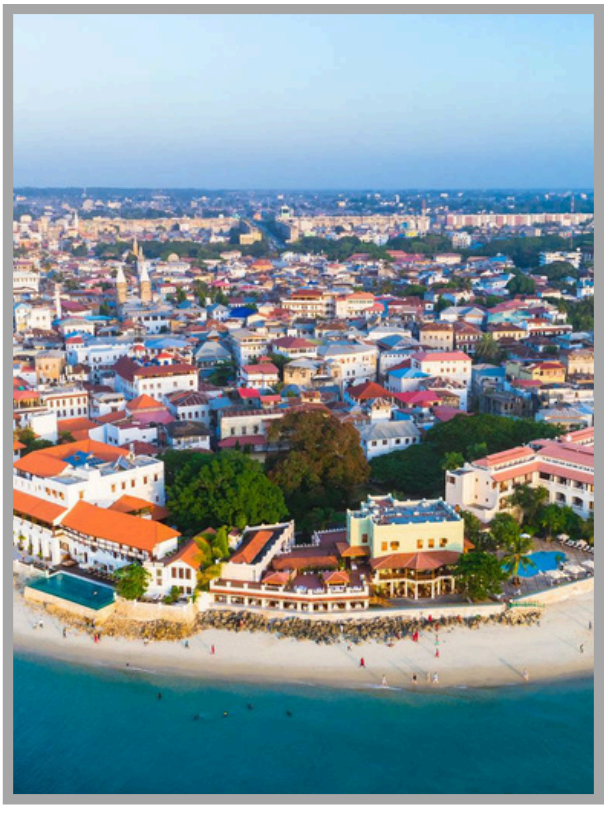

जांज़ीबार, पूर्वी अफ्रीका के तंजानिया का एक अर्ध-स्वायत्त क्षेत्र है। यह भारतीय महासागर में स्थित जांज़ीबार द्वीप समूह का हिस्सा है, जो मुख्य भूमि से 25 से 50 किलोमीटर (16–31 मील) दूर स्थित है। इस द्वीप समूह में कई छोटे द्वीप और दो बड़े द्वीप शामिल हैं: उन्गुजा (मुख्यद्वीप, जिसे सामान्यत: जांज़ीबार कहा जाता है) और पेम्बा। द्वीप की राजधानी जांज़ीबार सिटी है, जो उन्गुजा द्वीप पर स्थित है। यहाँ का ऐतिहासिक केंद्र "स्टोनटाउन" है, जिसे यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल के रूप में घोषित किया गया है।

पानी के खेल और प्राकृतिक सौंदर्य

जांज़ीबार द्वीप जल खेलों के शौकिनों के लिए स्वर्ग के समान है। यहाँ आप तैराकी, स्नॉर्कलिंग और डाइविंग जैसी गतिविधियाँ कर सकते हैं, जहाँ आप चमकदार मछलियों और जीवंत प्रवाल उद्यानों के पास से गुजर सकते हैं । इसके अलावा, समुद्र के किनारे डॉल्फ़िनों का झुंड भी खेलता हुआ नजर आता है।इसके चिकने और सुंदर समुद्र तट सूर्य की रोशनी में और भी अधिक आकर्षक दिखाई देते हैं।

ऐतिहासिक स्थल: स्टोनटाउन

जांज़ीबार द्वीप की राजधानी, जांज़ीबार सिटी में स्थित स्टोन टाउन, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण स्थल है। यहाँ की संकरी गलियाँ, प्राचीन इमारतें और वास्तुकला आपको अतीत में ले जाती हैं।इस शहर में आप उस समय को महसूस कर सकते हैं जब यह क्षेत्र व्यापार और संस्कृति का एक प्रमुख केंद्र था।

निष्कर्ष

जांज़ीबार द्वीप न केवल अपनी प्राकृतिक सुंदरता और समृद्ध संस्कृति के लिए प्रसिद्ध है, बल्कि यह इतिहास और परंपराओं का अद्भुत संगम भी है। यहां का वातावरण, समुद्र तट, जल खेल और ऐतिहासिक स्थल सभी मिलकर इसे एक अद्वितीय यात्रा स्थल बनाते हैं।चाहे आप यहां आराम करना चाहते हों या साहसिक गतिविधियाँ करना चाहते हों, जांज़ीबार हर तरह के पर्यटकों के लिए एक आदर्श गंतव्य है।

होली पर्व का व्यापार

होली के कारोबारी अवसरों का विश्लेषण

व्यापार जगत का उत्साह

कॉन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (CAIT) के अनुसार, इस साल होली के अवसर पर व्यापारियों के लिए 50,000 करोड़ रुपये से अधिक का व्यापार होने की संभावना है, जो पिछले वर्ष से लगभग 50 प्रतिशत अधिक है। पिछले साल 2022 में होली के दौरान लगभग 25,000 करोड़ रुपये का व्यापार हुआ था, जो पिछले वर्ष से 25 प्रतिशत अधिक था।

उपभोक्ता की बदलती प्राथमिकताएं

अब भारतीय उपभोक्ता अपने पर्यावरणीय प्रभाव को लेकर अधिक जागरूक हो गए हैं और वे ऐसे ब्रांड्स को प्राथमिकता दे रहे हैं जो टिकाऊ और प्राकृतिक उत्पाद प्रदान करते हैं। Bain & Company द्वारा नवंबर 2023 में किए गए एक सर्वेक्षण के अनुसार, भारतीय उपभोक्ता पर्यावरणीय रूप से संवेदनशील उत्पादों के लिए 15 से 20 प्रतिशत अधिक प्रीमियम चुकाने को तैया रहैं।

होली, भारत का एक प्रमुख त्योहार, हर साल व्यापारिक दृष्टिकोण से एक नई उम्मीद और उत्साह लेकर आता है। इस बार, व्यापारियों और उपभोक्ताओं का अनुमान है कि आगामी होली के अवसर पर देश भर में व्यापार में 50,000 करोड़ रुपये (लगभग 60.6 बिलियन USD) से अधिक का टर्न ओवर होगा।यह पिछले वर्षों की तुलना में लगभग 50 प्रतिशत अधिक है, जो व्यापार जगत में नए उत्साह और आशावाद का प्रतीक है। दिल्ली, जो एक प्रमुख वाणिज्यिक केंद्र है, इस आंकड़े में लगभग 5,000 करोड़ रुपये (6.06 बिलियन USD) का योगदान देने की उम्मीद है।

इसके साथ ही, इस बार एक महत्वपूर्ण बदलाव देखा गया है, जहां अधिकांश व्यापारी और उपभोक्ता चीनी सामान का बहिष्कार कर भारतीय उत्पादों को प्राथमिकता दे रहे हैं।इस बदलाव के साथ, भारतीय निर्मित हर्बल रंग, गुलाल, पानी की बंदूकें, गुब्बारे, धार्मिक सामान (पूजा सामग्री), कपड़े और अन्य त्योहारी आवश्यकताओं की डिमांड में बढ़ोतरी हो रही है।

पैकेज्ड मिठाइयों का बाजार

पैकेज्ड मिठाइयों का बाजार 2023 में ₹6,229.7 करोड़ था और 2032 तक यह ₹25,970.8 करोड़ तक पहुंचने का अनुमान है, जिसमें 16.67% का वार्षिक वृद्धि दर (CAGR) अनुमानित है।

चीनी उत्पादों का आयात

पिछले कुछ वर्षों तक होली से संबंधित सामानों का आयात लगभग 10,000 करोड़रु पये (12.12 बिलियन USD) के आस पास था, लेकिन इस साल इसमें काफी कमी आई है।

ई-कॉमर्स उद्योग का योगदान

ई-कॉमर्स उद्योग में, सामान्य दिनों में लगभग नौ मिलियन शिपमेंट होते हैं, लेकिन त्योहारी सीजन के दौरान, जैसे 2022 में, बिक्री की मात्रा में लगभग तीन गुना वृद्धि देखी गई थी। भारत के छोटे और मझोले उद्यम (MSMES) इस होली पर्व के दौरान पिछले साल की तुलना में अधिक विकास की उम्मीद कर रहे हैं। 2022 के त्योहारी सीजन में ई-कॉमर्स प्लेटफार्मों ने ₹24,500 करोड़ की कुल बिक्री दर्ज की थी, जो पिछले साल की तुलना में 1.3 गुना अधिक थी। इन प्लेटफार्मों ने त्योहारी बिक्री के दौरान ₹6,000 करोड़ की दैनिक बिक्री की। इसने कई छोटे व्यवसायों के लिए मील का पत्थर साबित किया है।

स्टार्ट अप्स की भूमिका

भारतीय स्टार्ट अप्स ने होली मनाने के तरीके को पर्यावरणीय दृष्टिकोण से नया रूप दिया है।कई स्टार्टअप्स ने अपनी अभिनव उत्पादों के साथ बाजार में धमाल मचाया है। इनमें प्रमुख हैं - PHOOL.co, ऑल नेचुरल्स, अंतरक्रांति, अर्सियन (ऑर्गाक्यु), बिगस्मॉल, अर्थ इंस्पायर्ड, फर्न्स एन पेटल्स, इटोकरी.कॉम, कपिवा, माय पूजा बॉक्स, निर्मलया, ऑर्गेनिक हार्वेस्ट, टू ब्रदर्स ऑर्गेनिक फार्म्स, और यसमैडम

PHOOL.co एक ऐसा स्टार्टअप है जो सर्कुलर इकॉनमी को ध्यान में रखते हुए फूलों के अपशिष्ट को लक्जरी इन्केन्स, गुलाल और वेलनेस उत्पादों में बदलता है। इसके अलावा, यसमैडम, क्लीनिकली, मॉम्स एंड कंपनी, कामा आयुर्वेदा, और द आयुर्वेदा. जैसे स्टार्ट अप्स होली से पहले और बाद में स्किन केयर उत्पाद पेश कर रहे हैं।

300 भीख मांगने वाले हाथियों को मुक्त कराने का लक्ष्य

लेख सौजन्य , वाइल्डलाइफ एसओएस

दो साल पहले, वाइल्डलाइफ एसओएस को मोती नाम के एक भीख मांगने वाले हाथी की मदद के लिए आपातकालीन कॉल आई, जो दुखद रूप से गिर गया था। कई हफ्तों के दौरान, हाथी को बचाने के लिए अनगिनत प्रयास किये गए, जिसमें भारतीय सेना ने भी योगदान दिया। अफसोस की बात है कि मोती को बचाया नहीं जा सका, लेकिन यह स्पष्ट था कि अगर कोई कार्रवाई नहीं की गई तो ऐसे ही कई और हाथियों की मौतें होंगी। इस ही बात को ध्यान में रखते हुए वाइल्डलाइफ एसओएस 2030 तक सभी भीख मांगने वाले हाथियों को बचाने के लिए एक अभियान शुरू कर रहा है।

अक्सर अवैध रूप से और उचित कागजी कार्रवाई के बिना, अनुमानित 300 हाथियों को पैसा कमाने के उद्देश्य से देश की सड़कों पर चलने के लिए मजबूर किया जाता है। कुपोषित और दुर्बल इन हाथियों को और इनकी पीड़ा को अक्सर लोगों द्वारा नजरअंदाज कर दिया जाता है। आमतौर पर छोटे बच्चे के रूप में जंगल से पकड़ कर अपने झुंड से अलग कर दिए गए इन हाथियों को 'भीख मांगने वाले' हाथियों के रूप में जाना जाता है। बुद्धिमान और सामाजिक जानवर यह हाथी नेत्रहीन, एकान्त जीवन और गंभीर चोटों के साथ अपना जीवन जीते हैं। इन्हें करतब दिखाने, आशीर्वाद देने या सवारी कराने और समारोहों और त्योहारों में देखा जा सकता है।

वाइल्डलाइफ एसओएस को भारत के पहले समर्पित हाथी अस्पताल के निर्माण के साथ-साथ 'नृत्य' भालू की सदियों पुरानी प्रथा को समाप्त करने के लिए जाना जाता है। 40 से अधिक हाथियों को बचाने के बाद, उनकी विशेषज्ञता अब भारत में भीख माँगने वाले हाथियों की ओर निर्देशित है।

एशिया में हाथियों की सबसे बड़ी संख्या भारत में है। यहां 30,711 जंगली और 3,000-4,000 बंदी जानवर हैं। 2017 में जारी वर्ल्ड एनिमल प्रोटेक्शन के अध्ययन, टेकन फॉर ए राइड के अनुसार, लगभग 350, जो अपेक्षाकृत कम संख्या है, पर्यटन में उपयोग किए जाते हैं।

इसके विपरीत, थाईलैंड में पर्यटन में हाथियों की सबसे अधिक संख्या है, जो लगभग 2,200 है , जो भारत, श्रीलंका, नेपाल, लाओस और कंबोडिया में पर्यटन में हाथियों की कुल संख्या से लगभग दोगुनी है।

अफ्रीका

सूरी जनजाति की संस्कृति: लिप प्लेट्स और परंपराएँ

सूरी जन जाति, जो दक्षिणी इथियोपिया के दूर दराज़ क्षेत्रों में बसी हुई है, अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक परंपराओं और जीवन शैली के लिए प्रसिद्ध है। इस जनजाति की महिलाएँ अपनी सुंदरता और पहचान को प्रकट करने के लिए बड़े आकार के लिपप्ले ट्स (होठों के प्लेट) पहनती हैं, जो उन की सांस्कृतिक विरासत का एक अहम हिस्सा माने जाते हैं।

लिप प्लेट्स (Lip Plates)

सूरी जनजाति की महिलाओं के लिए लिप प्लेट्स पहनना एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक परंपरा है।यह परंपरा लड़कपन से शुरू होती है और महिलाओं के वयस्क होने के संकेत के रूप में मानी जाती है। लिप प्लेट्स केआकार में समय के साथ वृद्धि होती है, और जब महिलाएँ इनप्लेट्स को पहनती हैं, तो उनके निचले होठ लटकने लगते हैं। यह न केवल उनकी सुंदरता का प्रतीक है, बल्कि यह उनके समाज में एक विशिष्ट पहचान को भी दर्शाता है।

सूरी जनजाति का जीवनशैली

सूरी जनजाति का जीवन मुख्य रूप से कृषि और पशुपालन पर निर्भर है।वे अपने खानपान, वस्त्र और आवास में अपनी परंपराओं का पालन करते हैं। उनके घर अक्सर झोपड़ियों के रूप में होते हैं, और वे प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करके अपना जीवन यापन करते हैं।पुरुषों का मुख्य कार्य मवेशियों की देखभाल करना होता है, जबकि महिलाएँ घरेलू कार्य और बच्चों की देखभाल करती हैं।

सूरी जनजाति का सांस्कृतिक महत्व

सूरी जनजाति की संस्कृति इथियोपिया और अफ्रीका की अन्य जन जातियों से अलग है। यह उन की पहचान और पारंपरिक मूल्यों को संरक्षित रखने का एक तरीका है। लिपप्लेट्स पहनने की परंपरा, परिवार और समुदाय के बीच एकता को बढ़ावा देती है और सांस्कृतिक धरोहर को जीवित रखती है।

एथियोपिया की झील कुराम

एथियोपिया के डनाकिल डिप्रेशन में स्थित झील कुराम, एक खारी झील है जो अपनी अनूठी भूगोलिक और पर्यावरणीय विशेषताओं के लिए प्रसिद्ध है।यह समुद्र तल से कम ऊँचाई पर स्थित है और अफारत्रि कोण क्षेत्र का हिस्सा है, जो सक्रिय ज्वालामुखियों, नमक की समतल भूमि और कठोर जलवायु के लिए जाना जाता है।

यह झील उच्च वाष्पीकरण दरों का अनुभव करती है, जिसके कारण यहाँ खारापन स्तर बहुत अधिक होता है।झील के आसपास विभिन्न रेगिस्तानी परिदृश्य हैं, और यह कुछ प्रवासी पक्षियों और अन्य वन्य जीवों के लिए महत्वपूर्ण आवास के रूप में कार्य करती है । इस क्षेत्र की चरम स्थितियाँ इसे पृथ्वी के सब से गर्म स्थानों में से एक बनाती हैं, और यह भूविज्ञान, पारिस्थिति की और जलवायु पर एक अद्वितीय दृष्टिकोण प्रदान करती है।

कुराम झील न केवलअपनी उच्च खारापन के लिए प्रसिद्ध है, बल्कि यह क्षेत्र पर्यावरणीय शोध और अन्वेषण के लिए भी एक आकर्षण का केंद्र है।यहाँ के अत्यधिक कठोर और विशिष्ट वातावरण में जीवन के अनुकूलन की अनोखी मिसालें देखी जा सकती हैं।

पर्यटन पर कार्यक्रम

सम्मलेन

ग्लोबल टूरिज्म कॉन्क्लेव

PHD चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री द्वारा आयोजित 7वां ग्लोबल टूरिज्म कॉन्क्लेव ने पर्यटन उद्योग में सिनेमा की शक्ति को उजागर किया। यह महत्वपूर्ण इवेंट भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय के सहयोग से आयोजित किया गया, जिसमें देशभर से पर्यटन और फिल्म उद्योग के विशेषज्ञों ने भाग लिया। कॉन्क्लेव का विषय था "रील से रियल: गंतव्यों की नई परिभाषा", जो यह दर्शाता है कि किस तरह फिल्में और सिनेमा पर्यटन के लिए एक शक्तिशाली टूल साबित हो सकती हैं।

इस कॉन्क्लेव का मुख्य उद्देश्य फिल्म इंडस्ट्री के माध्यम से पर्यटन को बढ़ावा देने के नए तरीके तलाशना था। इसके तहत यह विषय उठाया गया कि किस तरह फिल्में और फिल्म निर्माण स्थलों की ब्रांडिंग पर्यटन को बढ़ावा दे सकती हैं। कॉन्क्लेव में भाग लेने वाले प्रमुख राज्य थे – गुजरात पर्यटन, मध्य प्रदेश पर्यटन और उत्तर प्रदेश पर्यटन, जिन्होंने इस आयोजन को अपने राज्य के पर्यटन स्थल को वैश्विक स्तर पर प्रस्तुत करने का एक बेहतरीन अवसर माना।

PHDCCI ने इस कॉन्क्लेव के माध्यम से भारत को एक प्रमुख फिल्म निर्माण गंतव्य के रूप में प्रस्तुत करने की अपनी प्रतिबद्धता को दोहराया। संगठन ने यह आह्वान किया कि सभी संबंधित पक्षों को इस संयोग के आर्थिक और सांस्कृतिक संभावनाओं का लाभ उठाना चाहिए। इस प्रकार, यह कॉन्क्लेव पर्यटन और फिल्म उद्योग के बीच सहयोग को मजबूत करने की दिशा में एक अहम कदम साबित हुआ है।

समाप्ति में, PHDCCI का यह कॉन्क्लेव दर्शाता है कि सिनेमा न केवल मनोरंजन का एक स्रोत है, बल्कि यह वैश्विक पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए एक शक्तिशाली माध्यम भी बन सकता है।

नियुक्ति

श्री राजू सिंह बने पर्यटन मंत्री

बिहार के पर्यटन मंत्री बनने के दौरान राजू सिंह ने कहा मैं स्वयं भी विदेशों में कई साल तक अध्ययन के क्रम में निवास किया हूं, उस दौरान वैश्विक पर्यटन को नजदीक से जाना और समझा हूं, उस अनुभव को राज्य में पर्यटन विभाग के कार्यों की बेहतरी के लिए उपयोग में लाऊंगा। उन्होंने कहा कि यह आम धारणा है कि बिहार में पर्यटक कम आते हैं, लेकिन ऐसा नहीं है। गत वर्ष ही करोड़ो पर्यटक बिहार पहुंचे थे। यह हम सबके लिए हर्ष की बात है कि आज राज्य के विभिन्न पर्यटन स्थलों पर पर्यटक रूक कर सुखद अनुभूति महसूस कर रहे हैं। पर्यटन संपदाओं से समृद्ध इस प्रदेश में पर्यटन उद्योग की असीम संभावनाएं है। पर्यटन को रोजगारोन्मुख बनाने के लिए पर्यटन स्थलों को विकसित कर पर्यटकों की बुनियादी सुख-सुविधाओं का समुचित प्रबंधन करने का कार्य राज्य सरकार की प्राथमिकता है। राज्य में आने वाले पर्यटकों को बेहतर सुविधा, सहयोग एवं यात्रा परिभ्रमण आनंदमय हो, इस दिशा में पर्यटन विभाग लगातार प्रयासरत रहेगा। इस अवसर पर विभागीय पदाधिकारी व कर्मचारीगण उपस्थित थे।

उत्सव

गार्डन ऑफ फाइव सेंसेज का आयोजन

दिल्ली पर्यटन द्वारा 37 वें उद्यान पर्यटन उत्सव का आयोजन गार्डन ऑफ फाइव सेंसेज में 21 से 23 फरवरी 2025 तक किया जा रहा हैं। यह गार्डन 20 एकड़ के क्षेत्रफल में फैला हुआ हैं जहां पर चारों तरफ फैली हरियाली इस भाग-दौड़ भरी जिंदगी में सुकून के पल प्रदान करती है।

सन् 1988 में प्रथम उद्यान पर्यटन उत्सव का आयोजन ग्रेटर कैलाश के डी0डी0ए0 पार्क में किया गया था, जिसकी अपार सफलता को देखते हुए इसे वार्षिक उत्सव घोषित किया गया। इसके उपरान्त उद्यान पर्यटन उत्सव इण्डिया गेट तथा तालकटोरा गार्डन मे भी क्रमशः आयोजित किया गया। उत्सव की लोकप्रियता के कारण दिल्ली पर्यटन इस वर्ष अपना 37 वां पर्यटन उद्यान उत्सव मना रहा है। जिसका बागवान प्रेमियों को बेहद इंतजार रहता है।

37 वें उद्यान पर्यटन उत्सव की थीम " खुशहाली और स्वास्थ बागवानी के साथ" पर आधारित है। उत्सव का उद्देश्य दिल्लीवासियों को पर्यावरण के प्रति जागरूक करना है। जितना अधिक हम बागवानी को बढ़ाऐंगे उतना ही हमारा जीवन खुशहाल और स्वस्थ्य रहेगा और हमारे स्वास्थ्य को लाभ मिलेगा। इसका उपयोग प्रदूषण से बचाने में हमारी रक्षा करता है। बागवानी के द्वारा चारों तरफ फैली हरियाली मानव मस्तिष्क को शांति प्रदान करती है।

पर्यटन उद्यान उत्सव में प्रतिभागियों द्वारा 32 श्रेणियों के मध्य प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें कैक्टस से लेकर डहलिया, लिली, गुलाब, गुलदाउदी, गमले वाले पौधे, गमलों से अलग किए गए पौधे, टोकरियों से लटकने वाले पौधे, ट्रे गार्डन, गमलों में सब्जियां व औषधिय पौधे आदि भी प्रदर्शित किए जा रहे है।

ट्यूनीशिया पश्चिम और दक्षिण-पश्चिम में अल्जीरिया से, दक्षिण-पूर्व में लीबिया से और उत्तर और पूर्व में भूमध्य सागर से घिरा हुआ है।

ट्यूनीशिया के अद्भुत रहस्यों की खोज

इतिहास और संस्कृति की यात्रा

ट्यूनिस: ट्यूनीशिया का हृदय

हमारी यात्रा की शुरुआत होती है ट्यूनिस से, जो इस राष्ट्र की राजनीतिक और सांस्कृतिक धड़कन है। अरबी, अफ्रीकी और यूरोपीय प्रभावों के मिश्रण से भरा हुआ ट्यूनिस, विरोधाभासों का एक शहर है। यहाँ की पुरानी मेडिना, जो यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल के रूप में मान्यता प्राप्त है, संकरी गलियों से भरी हुई है, जो हलचल भरे बाजारों, कारीगरों की कार्यशालाओं और छुपे हुए खजानों से भरी हुई हैं।
मेडिना: ट्यूनिस की मेडिना शहर का दिल है, जहाँ आप सुंदर सजाए गए घरों और दरवाजों से सजी संकरी गलियों में खो सकते हैं। हर मोड़ पर कुछ नया देखने को मिलता है - छोटे कैफे से लेकर सजीव बाजारों तक जहाँ मसाले, हस्तनिर्मित सामान और बहुत कुछ मिलता है।
अल-ज़ैतूना मस्जिद: मेडिना के बीचो-बीच स्थित, अल-ज़ैतूना मस्जिद, जो 8वीं सदी में स्थापित हुई थी, यहाँ की समृद्ध इस्लामी धरोहर का प्रतीक है।
विले नोवेल: मेडिना केबाहर विलेनोवेल क्षेत्र में आधुनिक ट्यूनिस का अनुभव करें, जहाँ चौड़ी सड़कें और औपनिवेशिक वास्तुकला देखने को मिलती है। यहाँ का मर्के सेंट्रल स्थानीय बाजार है जहाँ ताजे फल और अन्य सामान मिलते हैं।
ट्यूनीशिया एक ऐसी भूमि है जहाँ प्राचीन इतिहास और जीवंत संस्कृति का संगम होता है।यहाँ की यात्रा ने इस के खजाने को उजागर किया है - हलचल भरी मेडिनाओं से लेकर शांत रेगिस्तानी ओएसिस तक। इस के समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर और गर्म जोशी से भरी मेज़बानी ने इसे एक अविस्मरणी यगंतव्य बना दिया है।

भारत से ट्यूनीशिया पहुंचने के लिए तीन प्रमुख मार्ग हैं: दिल्ली इंटरनेशनल एयरपोर्ट से ट्यूनिस एयरपोर्ट तक, जिसमें औसतन 11 घंटे 55 मिनट का समय लगता है। गोवा के दाबोलिम एयरपोर्ट से ट्यूनिस एयरपोर्ट तक यात्रा करने में लगभग 16 घंटे 20 मिनट का समय लगता है। कोचिन इंटरनेशनल एयरपोर्ट से ट्यूनिस एयरपोर्ट तक जाने में भी औसतन 11 घंटे 55 मिनट का समय लगता है।

नॉमाडिक जीवन काअनुभव: सब्रिया और ऊंट की सवारी

जैसे-जैसे हम रेगिस्तान की गहराई में प्रवेश करते हैं, हम सब्रिया नामक एक छोटे से बस्ती में पहुँचते हैं जो घुमंतू जीवन के बारे में जानकारी प्रदान करती है।

घुमंतू संस्कृति: यहाँआप बédoइनमेज़बानी काअनुभव कर सकते हैं, जब सूर्योदय के समय चाय पीते हुए पारंपरिक भोजन का स्वाद लेते हैं। रेगिस्तान के कैम्प में रात बिताने का अनुभव और सहारा के असाधारण सौंदर्य को महसूस करना एक अविस्मरणीय अनुभव होगा।
ऊंट की सवारी: रेगिस्तान की यात्रा बिना ऊंट की सवारी के अधूरी रहती है।सोने जैसी रेत में ऊंट की सवारी करते हुए इस विशाल परिदृश्य का आनंद लें।

प्राचीन चमत्कारी स्थल: एल जेम और काइरुआन

हमारी यात्रा आगे बढ़तीहै एलजेम की ओर, जहाँ एक अद्भुत रोमन एंफीथिएटर खड़ा है, जो प्राचीन वास्तुकला की भव्यता का प्रतीक है।

एलजेम एंफीथिएटर: 3वीं सदीईस्वी में निर्मित यह विशाल संरचना 35,000 दर्शकों को समायोजित कर सकती थी।यहाँ के भूमिगत मार्गों से गुजरते हुए आप प्राचीन काल की झलक देख सकते हैं।
काइरुआन: इस्लाम का चौथा सबसे पवित्र शहर, काइरुआन अपनी भव्य ग्रेट मस्जिद के लिए प्रसिद्ध है। यह मस्जि मुस्लिमों के लिए एकतीर्थ स्थल है और इतिहास और संस्कृति में रुचि रखने वाले यात्रियों के लिए एक महत्वपूर्ण स्थल है।

ऐतिहासिक स्थल: कार्थेज और सिदीबौ सैद

ट्यूनिस से कुछ ही किलोमीटर दूर, प्राचीन कार्थेज के खंडहर हमारे इंतजार कर रहे हैं। फीनिशियनों द्वारा 9वीं सदी ईसा पूर्व में स्थापित कार्थेज एक शक्तिशाली समुद्री नगर था, जो भूमध्य सागर के इतिहास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता था।

कार्थेज के खंडहर: कार्थेज के खंडहरों में बर्सा हिलऔर पुनिक बंदरगाह शामिल हैं। यहाँ से समुद्र का दृश्य और प्राचीन समय की झलक मिलती है।
सिदी बौसैद: नीले और सफेदरंग की इमारतों वाला यह गांव कलाकारों और यात्रियों का प्रिय स्थल है। यहाँ की सुंदर गलियों में घूमें, चट्टान से समुद्र का दृश्य देखें और यहाँ का स्थानीय जैस्मिन चाय अवश्य चखें!

उत्तरी अफ्रीका

हवाई यात्रा में वापसी का अनावरण

भारत उन टॉप 10 देशों में पहले स्थान पर है, जहाँ सस्ती एयरलाइनों (लो-कॉस्ट कैरियर्स या LCCs) का कुल हवाई यात्रा क्षमता में सबसे बड़ा हिस्सा है। वैश्विक यात्रा डेटा प्रदाता OAG के अनुसार, भारत में LCCs, जिनमें प्रमुख रूप से इंडिगो का दबदबा है, कुल सीट क्षमता का 71 प्रतिशत हिस्सेदारी रखती हैं। इसके निकटतम प्रतिद्वंदी, इंडोनेशिया में LCCs कुल हवाई यात्रा सीट क्षमता का 64 प्रतिशत हिस्सेदारी रखते हैं। इसके विपरीत, चीन, जो कि दुनिया के सबसे बड़े हवाई यात्रा बाजारों में से एक है, अभी भी पारंपरिक पूर्ण-सेवा एयरलाइनों (FSCs) द्वारा ही शासित है, जहां LCCs का सिर्फ 12 प्रतिशत बाजार हिस्सा है। वहीं, ब्रिटेन का बाजार लगभग समान रूप से विभाजित है, जहाँ LCCs को पारंपरिक एयरलाइनों पर हल्का बढ़त प्राप्त है, इसके पीछे कई प्रमुख LCCs जैसे रयानएयर, ईज़ीजेट और विज़ एयर का योगदान है।

भारत में LCCs का हिस्सा वैश्विक औसत 34 प्रतिशत से कहीं अधिक है, जैसा कि OAG ने 2024 के लिए रिपोर्ट किया है। रिपोर्ट के अनुसार, 'एंसीलरी फीस' (अतिरिक्त शुल्क) ने उड़ान भरने की लागत को बढ़ा दिया है, जिससे उपभोक्ताओं को अपनी छोटी बच्चों के साथ बैठने के लिए अतिरिक्त भुगतान करने या बैग ले जाने के लिए शुल्क देना पड़ता है। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि यूएस की एयरलाइनों जैसे यूनाइटेड, डेल्टा, स्पिरिट, फ्रंटियर और अमेरिकन एयरलाइंस ने एंसीलरी फीस से अरबों डॉलर का राजस्व अर्जित किया है। 2013 और 2023 के बीच, इन पांच एयरलाइनों ने कुल $121.4 बिलियन का राजस्व सीट चार्जेज से कमाया, जिसमें यूनाइटेड ने $1.3 बिलियन कमाए, जबकि कैरी-ऑन बैगेज से $1.2 बिलियन।

2007 में, जब अमेरिकी एयरलाइनों ने अपनी आय बढ़ाने के लिएनॉन-टिकट स्रोतों को अपनाया, तो यह वैश्विक उद्योग के राजस्व का $2.5 बिलियन हिस्सा था। इस समय, वैश्विक सबसे बड़े LCCs के समूह में रयानएयर ग्रुप के एंसीलरी आय का 35.7 प्रतिशत हिस्सा था, ईज़ीजेट का 33.9 प्रतिशत, और साउथवेस्ट का 24.9 प्रतिशत था। इंडिगो इस मामले में पीछे है, क्योंकि उसने और अन्य एयरलाइनों ने अब सीट चयन के लिए 450 रुपये और उससे ऊपर शुल्क लेना शुरू कर दिया है।

आने वाले समय में, एयरलाइन एंसीलरीज का दायरा केवल पारंपरिक सेवाओं जैसे बैगेज शुल्क या सीट चयन तक सीमित नहीं रहेगा। एयरलाइंस अन्य यात्रा और जीवनशैली ब्रांड्स के साथ साझेदारी करके अपने एंसीलरी पारिस्थितिकी तंत्र का विस्तार कर सकती हैं। इसमें यात्रा बीमा, गंतव्य अनुभव, या यहां तक कि खुदरा उत्पादों की पेशकश शामिल हो सकती है। एयरलाइंस के पास यात्री व्यवहार पर डेटा एकत्र करने की बढ़ती क्षमता है, और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के उपयोग से एंसीलरी बिक्री की भविष्यवाणी करना और भी अधिक संभव हो सकता है।

कल्पना करें कि एक AI प्रणाली यात्री की पिछली खरीदारी, उड़ान इतिहास, और यहां तक कि मौसम की स्थिति या उड़ान देरी जैसी वास्तविक समय की जानकारी का विश्लेषण करके यह भविष्यवाणी कर सकती है कि वे कौन सी अतिरिक्त सेवाएं खरीद सकते हैं। उदाहरण के तौर पर, एक यात्री जो नियमित रूप से इन-फ्लाइट Wi-Fi खरीदता है, उसे बोर्डिंग से ठीक पहले एक व्यक्तिगत ऑफर मिल सकता है, जिसमें उसकी वफादारी स्थिति और उस विशेष उड़ान पर डिमांड के आधार पर मूल्य को गतिशील रूप से समायोजित किया गया हो।

2023-24 में एयरलाइनों के लिए एंसीलरी राजस्व में 21% की बढ़ोतरी हुई और यह कुल राजस्व का 2.6% बन गया, जो कि एक महत्वपूर्ण आंकड़ा है।चूंकि भारत में कोई ठोस नियामक नहीं है, एयरलाइंस नई और अभिनव फीस लगा रही हैं। यह कोई नई रणनीति नहीं है, क्योंकि 2005-06 में भारतीय एयरलाइनों ने उड़ान के दौरान पानी पर भी शुल्क लेना शुरू कर दिया था, जिस पर यात्रियों में जबरदस्त विरोध हुआ था और नागरिक उड्डयन महानिदेशालय को हस्तक्षेप करना पड़ा था।

हाल ही में, परिवारों को यह बताया जाता है कि यदि वे एक साथ बैठना चाहते हैं तो उन्हें अतिरिक्त भुगतान करना होगा, जो कि कुछ साल पहले तक बिल्कुल सामान्य था। वहीं, एयरलाइनों द्वारा खाना और पेय पदार्थों की बिक्री के साथ-साथ अन्य अतिरिक्त सेवाओं का भी अच्छा खासा राजस्व उत्पन्न हो रहा है।

इस तरह की रणनीतियाँ भविष्य में एयरलाइन उद्योग को नए तरीके से बदल सकती हैं, लेकिन यह सवाल उठता है कि सस्ती हवाई यात्रा की इस उन्नति से आम यात्रियों पर क्या असर पड़ेगा? क्या यह सस्ती यात्रा की अवधारणा को खतरे में डाल सकता है, या यात्रियों के लिए अधिक विकल्प और अनुकूलन की संभावनाएं लाएगा? यह समय ही बताएगा।

दक्षिण अफ्रीकी यात्रियों के लिए एशिया क्यों है आकर्षक

एशिया के ऐतिहासिक मंदिरों, सड़कों पर लगी बाजारों और खूबसूरत समुद्र तटों के अनुभव अब दक्षिण अफ्रीकी यात्रियों के लिए पहले से कहीं ज्यादा पास, सस्ती और स्वागत योग्य हैं। हनोई के ओल्ड क्वार्टर में ठंडी कॉफी का आनंद लेने या हलॉन्गबे के चूना पत्थर की चोटियों के बीच क्रूज़िंग करने का सपना अब सिर्फ संभव नहीं, बल्कि 2025 के लिए एक दम सही समय पर है। यात्रा प्रतिबंधों में राहत, अनुकूल विनिमय दर, और विस्तारित एयरलाइन विकल्पों के साथ, एशिया अब यात्रा करने के लिए सबसे बेहतरीन जगह बन गई है।

साउथ अफ्रीका के यात्रियों के लिए एशिया का आकर्षण

फ्लाइट सेंटर दक्षिण अफ्रीका की जनरल मैनेजर एंटोइनटेट टर्नर के अनुसार, "दुनिया भर में यात्रा के रुझानों के अलावा, दक्षिण अफ्रीकी यात्रियों के लिए एक अनूठा अवसर भी है: लंबी दूरी की प्रसिद्ध यात्रा स्थलों का आनंद लेना बिना अधिक खर्च किए और प्रमुख आकर्षणों के साथ-साथ गुप्त गहनों को भी खोजना, साथ ही अत्यधिक पर्यटन से बचना।"

वियतनाम: एक नया, आकर्षक गंतव्य

वियतनाम अपने संस्कृति, परिदृश्य और पर्यटन उद्योग में वृद्धि के कारण अब दक्षिण अफ्रीकी यात्रियों के लिए एक आदर्श गंतव्य बन चुका है। यह एक वैकल्पिक स्थल नहीं, बल्कि उन यात्रियों के लिए एक परिपूर्ण जगह है जो पर्यटकों से भरे गंतव्यों जैसे फुकेट या बाली से बाहर वास्तविक अनुभवों की तलाश में हैं।

2025 में दक्षिण अफ्रीकी यात्रियों के लिए एशिया का सही समय

संख्याएँ एक रोमांचक कहानी बयान करती हैं: 2025 तक एशिया में अवकाश यात्रा खर्च वैश्विक कुल का 35% तक पहुंच जाएगा, जबकि अगले दशक में एयर यात्री वृद्धि का 50% हिस्सा एशिया से होगा। इसका मतलब है कि दक्षिण अफ्रीकी यात्रियों के लिए यह एक शानदार अवसर है।

सरल प्रवेश और वीज़ा-मुक्त यात्रा

साउथ-ईस्ट एशिया के देशों में अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों का स्वागत करने के लिए कई पहल की जा रही हैं, जैसे कि वियतनाम का उपयोगकर्ता-मित्रई-वीज़ा प्रणाली, जिससे दक्षिण अफ्रीकी नागरिक अब ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं और 90 दिन तक वियतनाम में रह सकते हैं।

वियतनाम और एशिया में यात्रा की पहुंच

हालांकि दक्षिण अफ्रीका से वियतनाम के लिए अभी तक कोई सीधी उड़ान नहीं है, लेकिन कतर एयरवेज, अमीरात, और सिंगापुर एयरलाइन्स जैसी प्रमुख एयरलाइनों के माध्यम से हवाई मार्गों की सुगमता बढ़ गई है।

आर्थिकता और लक्जरी का संगम

हालांकि यूरोप और उत्तर अमेरिका जैसी लंबी दूरी की यात्रा स्थलों पर महंगाई के प्रभाव हो रहे हैं, दक्षिण-पूर्व एशिया के कई हिस्से अभी भी किफायती हैं, जिनमें लक्ज़री रिसॉर्ट्स और बुटीक होटल्स भी शामिल हैं।

वियतनाम के कुछ छुपे हुए खजाने

वियतनाम के कुछ लोकप्रिय और छुपे हुए गंतव्य इस प्रकार हैं:

- दानांग: एक उभरता हुआ पर्यटन स्थल, जो पहले सिर्फ हॉय एन और हुआ के बीच एक स्टॉपओवर माना जाता था।
- फोंगन्हा-के बैंग नेशनल पार्क: यह यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल साहसिक प्रेमियों के लिए एक स्वर्ग है।
- मेकोंगडेल्टा गांव: जो तटीय शहरों से दूर ग्रामीण जीवन का वास्तविक अनुभव प्रदान करता है।

निष्कर्ष

2025 में एशिया पर्यटन के क्षेत्र में एक बड़ा बदलाव लेकर आ रहा है। वियतनाम एक नए अनुभव के रूप में सामने आ रहा है, जो यात्रा प्रेमियों के लिए गर्मजोशी, असली अनुभव और कम भीड़ के साथ शानदार यात्रा विकल्प प्रदान कर रहा है।

गुंकांजिमा द्वीप : एक बंजर शहर की कहानी

बंजर और वीरान द्वीप

अब, 50 वर्षों से भी अधिक समय बाद, गुंकांजिमा बिल्कुल वैसा ही दिखता है जैसा मित्सुबिशी के जाने के बाद था। यहां के अपार्टमेंट्स अब खंडहर में तब्दील हो चुके हैं, और इमारतें धीरे-धीरे गिरने लगी हैं। द्वीप के खाली आंगन और गलियारों में अब हरी-भरी वनस्पति उगने लगी है, जो इसके भूतिया रूप को और बढ़ाती है। टूटी हुई खिड़कियों से समुद्र की ठंडी हवा बहती है, और हर जगह पुराने अखबार और टूटे कांच बिखरे हुए हैं।

गुंकांजिमा अब एक भूतिया शहर के रूप में बदल चुका है, जहां लोग नहीं रहते, लेकिन इसके खंडहर इतिहास के एक गहरे पहलू को उजागर करते हैं। यह द्वीप अब प्रकृति के हवाले हो चुका है, और समय के साथ धीरे-धीरे इसे ध्वस्त होने से कोई नहीं बचा सकता।

दुनिया में कुछ स्थान ऐसे हैं, जिनका इतिहास न केवल अजीब होता है, बल्कि वह हमें मानवता की जटिलताओं और दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओं का भी अहसास कराते हैं। जापान का गुंकांजिमा द्वीप ऐसा ही एक स्थान है, जो एक समय दुनिया के सबसे घनी आबादी वाले स्थान के रूप में जाना जाता था, लेकिन अब यह पूरी तरह से वीरान और बंजर हो चुका है। यह द्वीप नागासाकी के तट के पास स्थित है, और अपनी अनोखी कहानी के कारण पर्यटकों और इतिहास प्रेमियों के लिए एक आकर्षण का केंद्र बन चुका है।

इतिहास की शुरुआत

गुंकांजिमा का इतिहास 1900 के दशक की शुरुआत में शुरू होता है, जब मित्सुबिशी कॉर्पोरेशन ने इस द्वीप का विकास किया था। यह द्वीप समृद्ध कोयला भंडार पर स्थित था, और मित्सुबिशी ने इसे एक महत्वपूर्ण खनन केंद्र के रूप में बदल दिया। खदान की गहराई और विस्तार के कारण, द्वीप के नीचे का कोयला जापान के औद्योगिक विस्तार के लिए बेहद महत्वपूर्ण बन गया। इसके चलते द्वीप पर तेजी से कार्य शुरू हुआ और लगभग 100 वर्षों तक यह कोयला खनन के लिए प्रमुख केंद्र रहा।

कई सालों तक लोगों का घर

1941 तक, गुंकांजिमा का आकार एक छोटे से द्वीप से एक पूर्ण विकसित शहर में बदल चुका था। द्वीप के छोटे आकार के बावजूद, यहां की आबादी लगभग 6,000 लोगों तक पहुँच गई थी। यह संख्या उस समय के हिसाब से बहुत अधिक थी और इस द्वीप को दुनिया के सबसे घनी आबादी वाले स्थान के रूप में जाना जाता था। इस घनी आबादी को समायोजित करने के लिए, मित्सुबिशी ने दस मंजिला अपार्टमेंट्स का निर्माण किया था। यह अपार्टमेंट्स एक जटिल संरचना के रूप में बने थे, जिसमें गलियारों, आंगनों और सीढ़ियों से जुड़ी हुई इमारतें थीं।

यहां पर रहने वाले लोगों के लिए स्कूल, रेस्टोरेंट, और गेमिंग हाउस भी बनाए गए थे, जिससे यह द्वीप एक छोटे से समृद्ध शहर जैसा प्रतीत होता था। यहां के लोग खदान में काम करते थे, जिसमें कई लोग कोरियाई मूल के थे और उन्हें मजबूरी में काम करने के लिए लाया गया था। इस द्वीप को "मिदोरी नाशी शिमा" (ग्रीनलेस द्वीप) के नाम से भी जाना जाता था, क्योंकि यहां किसी प्रकार की हरियाली नहीं थी।

गहरी खदान और उसके बाद का जीवन

1941 तक, द्वीप पर खनन कार्य में भारी बढ़ोतरी हुई और द्वीप से 400,000 टन कोयला हर साल निकाला जाने लगा। इसके साथ ही, यहाँ की जनसंख्या में भी निरंतर वृद्धि होती गई। लेकिन एक समय ऐसा आया जब कोयला खदान का भंडार समाप्त होने लगा और मित्सुबिशी ने खदान को बंद करने का निर्णय लिया। 1974 में खदान बंद होने के बाद, द्वीप पूरी तरह से खाली हो गया और लोग इसे छोड़कर चले गए।

आज की स्थिति और आकर्षण

आज, गुंकांजिमा एक पर्यटक स्थल के रूप में प्रसिद्ध हो गया है। पर्यटक यहाँ के खंडहरों को देखने और इस अनोखे इतिहास को जानने के लिए आते हैं। द्वीप के खंडहरों में चलना, पुराने अपार्टमेंट्स और गलियारों को देखना, और वह सन्नाटा महसूस करना, जो एक समय इस द्वीप पर था, यह सब पर्यटकों के लिए एक अलग अनुभव है।

हालांकि इस द्वीप की यात्रा करने के लिए कुछ सुरक्षा नियम और अनुमति की आवश्यकता होती है, लेकिन यह स्थान आज भी अपने इतिहास और रहस्य को समेटे हुए है। यह हमें यह याद दिलाता है कि कैसे मानवता ने एक समय इस द्वीप पर अपना साम्राज्य स्थापित किया था, लेकिन समय के साथ यह सब खत्म हो गया और अब यह केवल एक खंडहर के रूप में अस्तित्व में है।

गुंकांजिमा का इतिहास, इसकी जटिलताओं और मानवता की कड़ी मेहनत की कहानी, आज भी लोगों के लिए एक प्रेरणा है। यह द्वीप न केवल जापान के औद्योगिक इतिहास का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, बल्कि यह हमें यह भी दिखाता है कि समय के साथ हर चीज़ बदल सकती है, चाहे वह समृद्धि हो या पतन।

तंजानिया के हया लोगों की अद्वितीय कहानी:

तंजानिया के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र में बसे हया लोग एक प्राचीन और समृद्ध संस्कृति के धनी हैं। इनकी इतिहास 2,000 साल पुरानी है और वे अपनी उन्नत धातु विज्ञान के लिए प्रसिद्ध रहे हैं। हया लोगों ने यूरोप में औद्योगिक क्रांति के समय से पहले ही उच्च गुणवत्ता वाले स्टील का उत्पादन शुरू कर दिया था। यह खोज न केवल अफ्रीका की धातु विज्ञान की अद्वितीयता को उजागर करती है, बल्कि यह यूरोपीय धातु विज्ञान के विकास की परंपरागत धारा को भी चुनौती देती है।

हया लोगों का इतिहास एक अद्वितीय और प्रेरणादायक कहानी है। यह केवल उनके प्रौद्योगिकीय कौशल और कृषि में नवाचारों का ही नहीं, बल्कि उनके सामाजिक और सांस्कृतिक धरोहर का भी प्रदर्शन करता है। प्राचीन हया समाज की ताकत, सहनशीलता और संघर्ष की गाथाएं आज भी समृद्ध हैं और पूरी दुनिया को अफ्रीकी सभ्यता के बारे में नई समझ देने में सहायक हैं।

हया लोग झील विक्टोरिया के पास बसे हुए थे और उन्होंने अपने समाज को समृद्ध बनाने के लिए उन्नत स्टील निर्माण विधियों का विकास किया था। 1970 के दशक में बूहाया गांव में की गई खुदाई से हया लोगों द्वारा निर्मित प्राचीन लौह पिघलाने वाले भट्टियां प्राप्त हुईं, जो उनकी धातु विज्ञान की उन्नति को दर्शाती हैं। इन भट्टियों, जिन्हें "नकुलु भट्टियां" भी कहा जाता है, में 1,800°C (3,272°F) तक तापमान पहुँच सकता था, जिससे उच्च कार्बन स्टील का उत्पादन संभव होता था।
इन भट्टियों में पशु खाल से बने बेलोज़ (पंखे) का उपयोग किया जाता था, जो हवा को मजबूती से संचारित करते थे और इस प्रकार धातु के पिघलने की प्रक्रिया को नियंत्रित करते थे। इसके परिणामस्वरूप प्राप्त कार्बन स्टील की गुणवत्ता औद्योगिक क्रांति के समय में बनाए गए स्टील के समान थी, जो हया लोगों की धातु विज्ञान और पायरोटेक्नोलॉजी में महारत को प्रमाणित करती है।

प्रभाव और उपयोग

हया लोग अपने उच्च गुणवत्ता वाले स्टील का उपयोग औजारों, हथियारों और कृषि उपकरणों के निर्माण में करते थे। इन उपकरणों ने उनके समाज के समृद्ध होने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह खोज यूरोपीय और एशियाई धातु विज्ञान के योगदान की पारंपरिक व्याख्याओं को चुनौती देती है और अफ्रीका के ऐतिहासिक तकनीकी नवाचारों को उजागर करती है।

वैज्ञानिक और ऐतिहासिक महत्व

हया लोगों की तकनीकें पदार्थ विज्ञान और तापगतिकी (thermodynamics) के एक प्रारंभिक ज्ञान को दर्शाती हैं। यह खोज प्राचीन अफ्रीका के अद्वितीय योगदान को प्रकट करती है, जो अक्सर उपनिवेशीकरण के बाद की इतिहास लेखन में अनदेखी कर दिया जाता है। हया लोगों का यह विकास न केवल उनकी अपनी संस्कृति के लिए महत्वपूर्ण था, बल्कि यह वैश्विक तकनीकी इतिहास में भी एक महत्वपूर्ण अध्याय जोड़ता है।

कृषि और सांस्कृतिक विरासत

हया लोग अपनी कृषि में भी अत्यधिक नवाचारों के लिए प्रसिद्ध थे। वे जड़ वाली फसलें और अनाजों, जैसे कि फिंगर मीलट और ज्वार, की खेती करते थे। लौह उपकरणों का प्रयोग कृषि उत्पादन को बढ़ाने में किया गया, और इसने बीन्स जैसे अन्य पौधों के उपयोग की शुरुआत की। यह कृषि प्रणाली एक समृद्ध और सशक्त समुदाय के निर्माण में सहायक रही।
हया लोग अपनी पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों में भी प्रवीण थे, जहां उन्होंने सैकड़ों पौधों की प्रजातियों से प्राकृतिक औषधियाँ तैयार कीं। ये औषधियाँ त्वचा की बीमारियों से लेकर स्त्री रोग तक की समस्याओं के उपचार में उपयोगी थीं। आज भी, हया लोग पारंपरिक और आधुनिक चिकित्सा पद्धतियों का संयोजन करते हैं।

राजनीतिक संघर्ष और उपनिवेशवाद

18वीं शताब्दी के अंत में क्यांटवारा साम्राज्य में बड़े पैमाने पर संघर्ष हुआ, जिसके परिणामस्वरूप चार नए राज्य स्थापित हुए। हालाँकि, बाद में, बकांगो और बहिंडा कबीले के बीच सत्ता संघर्षों ने इन राज्य व्यवस्था को कमजोर किया। जर्मन उपनिवेशीकरण के बाद, सात हया राज्य स्थापित हुए थे, जिनमें किज़ीबा, इहांगिरो, किहांजा, बुकारा, लेसर क्यांटवारा, बुगाबो और मिस्सेने शामिल थे।

"दुनिया के सबसे सुरक्षित देशों की स्थिति: शांति सूचकांक और वैश्विक बदलाव"

भारत की स्थिति

भारत 2024 के वैश्विक शांति सूचकांक में 116वें स्थान पर है, जो 163 देशों में से है। भारत की रैंकिंग मुख्य रूप से आंतरिक संघर्षों, सैन्यीकरण के उच्च स्तर और पड़ोसी देशों के साथ बढ़ती तनावों के कारण प्रभावित होती है, जो देश में सुरक्षा और शांति की धारणा को प्रभावित करते हैं।

वैश्विक शांति सूचकांक (GPI) दुनिया के सबसे सुरक्षित और शांतिपूर्ण देशों को रैंक करता है। यह रिपोर्ट हर साल इंस्टीट्यूट फॉर इकॉनॉमिक्स एंड पीस द्वारा प्रकाशित की जाती है, जो खुद को "एक स्वतंत्र, निष्पक्ष, गैर-लाभकारी संगठन" के रूप में परिभाषित करता है, जिसका उद्देश्य दुनिया के ध्यान को शांति की ओर केंद्रित करना है, जो मानव कल्याण और प्रगति के लिए एक सकारात्मक, प्राप्त करने योग्य और ठोस उपाय है। इस रिपोर्ट में देशों का मूल्यांकन किया जाता है कि कौन से देश सबसे सुरक्षित हैं और कौन से सबसे खतरनाक।

दुनिया का सबसे सुरक्षित महाद्वीप

वैश्विक शांति सूचकांक में शीर्ष 25 देशों में से अधिकांश यूरोपीय देश हैं। इनमें विशेष रूप से नॉर्डिक देशों की पहचान सबसे सुरक्षित के रूप में की जाती है। नॉर्वे, डेनमार्क, आइसलैंड और फिनलैंड न केवल यूरोप के सबसे सुरक्षित देशों में शामिल हैं, बल्कि ये पूरी दुनिया में शीर्ष 25 सबसे सुरक्षित देशों में भी शामिल हैं। इस क्षेत्र को दुनिया का सबसे सुरक्षित क्षेत्र माना जाता है, जिसमें हत्या की दर 100,000 निवासियों पर केवल 0.8 घटनाएं हैं। इन नॉर्डिक देशों में दुनिया के सबसे खुशहाल देशों में भी शीर्ष 10 में स्थान है।

दूसरा सबसे सुरक्षित क्षेत्र एशिया है। यूरोप और एशिया दोनों में दुनिया की सबसे कम हत्या दर (100,000 निवासियों पर 3 या उससे कम) है।

दुनिया के सबसे सुरक्षित देशों की आम विशेषताएँ

दुनिया के सबसे सुरक्षित देशों में कुछ सामान्य विशेषताएँ पाई जाती हैं। इन देशों में आमतौर पर उच्च स्तर की संपत्ति, सामाजिक कल्याण और शिक्षा होती है। इसके अतिरिक्त, सुरक्षित देशों में आमतौर पर प्रभावी आपराधिक न्याय प्रणाली और सरकारें होती हैं जो अपने नागरिकों के साथ स्वस्थ संबंध बनाए रखती हैं।

2023 के GPI रिपोर्ट के अनुसार, पिछले 15 वर्षों में दुनिया की सुरक्षा में गिरावट आई है, जिसमें प्रति देश स्कोर औसतन 5% गिरा है। रिपोर्ट में यह भी उल्लेख किया गया है कि पिछले 15 वर्षों में से 13 वर्षों में शांति और सुरक्षा में कमी आई है। उदाहरण के लिए, 2023 के परिणामों से पता चलता है कि वैश्विक शांति का औसत स्तर 0.42% घटा है।

2023 रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि 1990 के दशक के बाद से आंतरिक संघर्षों में कमी आई है, जबकि अंतर्राष्ट्रीय संघर्षों में वृद्धि हुई है, विशेष रूप से पिछले दशक में। रूस-यूक्रेन युद्ध अभी भी विनाश का प्रमुख कारण है। यूक्रेन और रूस दोनों देशों में 2022 और 2023 के बीच शांति में सबसे बड़ी गिरावट आई है।

मॉस्को में भारतीय प्रभाव: इतिहास की झलक

मॉस्को में भारतीय समुदाय यूरोप में सबसे पुराने समुदायों में से एक माना जाता है। कहा जाता है कि रूस में पहला भारतीय सत्रहवीं शताब्दी में उल्लेखित हुआ था। कुछ इतिहासकारों का मानना है कि इस दौरान एक विशेष सराय बनवाई गई थी, जहां भारतीय व्यापारी ठहरते थे और उनके सामान मस्कोवाइट्स के बीच काफी लोकप्रिय थे। यह सराय XVII सदी के मॉस्को चेंबर्स में स्थित थी और भारतीय व्यापारियों के लिए एक महत्वपूर्ण स्थल थी।

मॉस्को राज्य त्चाइकोवस्की कंज़र्वेटरी

रूस में भारतीय संगीत की एक और प्रसिद्ध शख्सियत सूफी और उपदेशक इनायत ख़ान थे, जो प्रसिद्ध टिपू सुलतान के चचेरे भाई थे। उन्होंने 1913 में रूस यात्रा की थी और विभिन्न स्थानों पर प्रदर्शन किया, जिसमें सम्राटीय कंज़र्वेटरी भी शामिल थी, जो आज भी दुनिया भर में शास्त्रीय संगीत का एक प्रमुख केंद्र मानी जाती है।

मॉस्को का डसाल्ड होटल

रूसी साम्राज्य के इतिहास में कई भारतीय हस्तियाँ थीं जिनका संबंध अप्रत्याशित रूप से मॉस्को से था। उदाहरण के लिए, 1887 में सिक्ख राज्य के अंतिम शासक दुलीप सिंह ने मॉस्को के डसाल्ड होटल में ठहरने का अवसर पाया था। आज यह भवन आपातकालीन स्थिति मंत्रालय के कार्यालय के रूप में इस्तेमाल हो रहा है, लेकिन मस्कोवाइट्स अभी भी होटल की पुरानी भव्यता और शाही माहौल को याद करते हैं, जब यह एक शानदार होटल हुआ करता था।

रवींद्रनाथ ठाकुर स्मारक

प्रसिद्ध भारतीय लेखक रवींद्रनाथ ठाकुर ने 1930 में अपनी मॉस्को यात्रा के दौरान इस होटल में ठहरने का अनुभव किया था। उनके ठहरने की यादें आज भी एक स्मारक में संरक्षित हैं, जो भारत ने 1990 में रूस को उपहार स्वरूप दिया था, जब प्रधानमंत्री वी. पी. सिंह रूस दौरे पर थे। यह स्मारक भारत और रूस के सांस्कृतिक संबंधों की एक अहम निशानी बन चुका है।

पूर्व के श्रमिकों का साम्यवादी विश्वविद्यालय

सोवियत संघ में कई स्थान थे जो भारत से गहरे जुड़े हुए थे, उनमें से एक था "कम्युनिस्ट यूनिवर्सिटी ऑफ द टॉयलर्स", जहां 1920 के दशक में पहला भारतीय छात्र अध्ययन करने आया था। यह स्थल भारत और रूस के ऐतिहासिक संबंधों का प्रतीक बन चुका है।

मॉस्को नाट्य रंगमंच

इनायत ख़ान द्वारा "शकुंतला" का प्रदर्शन 1914 में क़ामेरनी थिएटर में हुआ था, जो इस थिएटर के उद्घाटन के रूप में महत्वपूर्ण था। इस थिएटर ने वर्षों में मॉस्को के सबसे प्रसिद्ध थिएटरों में अपनी जगह बनाई। आज इसे "मॉस्को ड्रामा थिएटर" के नाम से जाना जाता है, जिसका नाम प्रसिद्ध रूसी लेखक ए. एस. पुश्किन के नाम पर रखा गया है।

इस प्रकार, भारतीय समुदाय और भारतीय सांस्कृतिक प्रभाव रूस और विशेष रूप से मॉस्को में गहरे तौर पर जड़े हुए हैं। इन ऐतिहासिक स्थलों और घटनाओं ने दोनों देशों के रिश्तों को एक नई दिशा दी है और भविष्य में भी इन संबंधों के और अधिक विस्तार की संभावना है।

ई-कॉपी पढ़ने के लिए आज ही विजिट करें

WWW.YATRAMANTRAN.COM/MAGAZINE

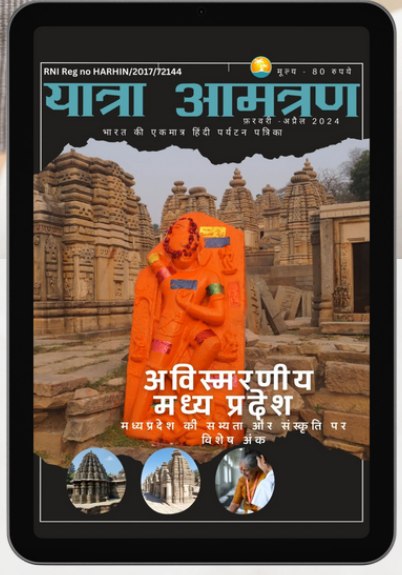

PRESS RELEASE

YATRAAMANTRAN@GMAIL.COM

Our Mission: Educate, Empower and Inspire

We are

Will India Change Foundation

413A, Sector 68, HSIIDC, IMT,
Faridabad, Haryana 121004

9971229644

www.willindiachange.org